



शांतिवन-डायमण्ड हॉल। शिक्षक दिवस के अवसर पर परमपिता परमशिक्षक के सानिध्य में सुंदर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने भारतवर्ष से आयीं तपस्विनी, राजयोगिनी बहनों के समक्ष अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 'तमसो मा ज्योतिर्गमय....' हम गाते तो आये, लेकिन अब उस परमशिक्षक ने हमारे जीवन को ज्ञान से प्रकाशित किया और वो समझ दे रहे हैं कि कैसे हम औरों को भी इस अज्ञान अंधकार से निकाल रोशनी में लेकर आये। दादी को साक्षी मानकर सभी ने हर्षोल्लास के साथ परमात्मा की शिक्षाओं को धारण कर पुनः भारत को दिव्य प्रकाश से आलोकित करने का दृढ़ संकल्प लिया। इस अवसर पर ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. रानी दीदी, ब्र.कु. मनोरमा बहन, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा अन्य वरिष्ठ राजयोगी शिक्षिकाएँ भी उपस्थित थीं।

श्रीमद्भगवद्गीता महासम्मेलन का भव्य आयोजन

● **दो दिवसीय महासम्मेलन में गीता ज्ञान के आध्यात्मिक पहलुओं पर हुई चर्चा** ● **विभिन्न प्रान्तों से गीताविदों ने की शिरकत**

भोपाल-म.प्र.। दुनिया में जितनी भी सभ्यतायें हुई हैं, उनके प्रमुख एक ताज पहनते थे। परंतु देवी देवताओं को दो ताज दिखाया गया है, एक है हीरे जवाहरातों का ताज और दूसरा पवित्रता का ताज। आज लोगों का मन दूषित होने की वजह से विकार एवं बुराइयों का जन्म होता है। उक्त विचार दो दिवसीय श्रीमद्भगवद्गीता महासम्मेलन के दौरान ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि गीता में वर्णित युद्ध का भी अपना आध्यात्मिक रहस्य है। जब हम अपने जीवन की बागडोर स्वयं परमात्मा को दे देते हैं तो पाँचों



मंचासीन हैं ब्र.कु. अवधेश बहन, ब्र.कु. त्रिनाथ, ब्र.कु. बृजमोहन, डॉ. एस.एम. मिश्रा तथा डॉ. पुष्पा पाण्डेय। सभा में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आये गीताविद।

कर्मन्द्रियाँ सही मार्ग पर चलती हैं व हम विकारों रूपी असुरों पर विजय प्राप्त करते हैं।

क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश बहन ने कहा कि जब इस धरा पर धर्म ग्लानि होती है तब परमात्मा परमधाम से इस धरा पर अवतरित होते हैं और

नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी जैसा दिव्य गुणवान और चरित्रवान बनाते हैं।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डॉ. एस.एम. मिश्रा ने कहा कि जब फल पक जाता है तब हम पेड़ से फल तोड़ते हैं। जब कल्पवृक्ष रूपी वृक्ष के फल पकते हैं

अर्थात् जब सम्पूर्ण जनसंख्या इस धरा पर आ जाती है तो स्वयं महाकाल परमात्मा इस धरा पर आते हैं। यहाँ आकर जो महावाक्य वे उच्चारण करते हैं, उसी महावाक्य अर्थात् मुरली के द्वारा राजयोग के योग को ब्रह्माकुमारीज में प्रतिदिन

सिखाया जाता है। हैदराबाद से आये ब्र.कु. त्रिनाथ ने कहा कि गीता में वर्णित है कि शरीर क्षेत्र है। क्षेत्र को ज़मीन भी कहा जाता है। जिस तरह से ज़मीन के हम मालिक होते हैं लेकिन हम ज़मीन नहीं हैं, उसी तरह हम शरीर नहीं हैं, बल्कि

शरीर को चलाने वाली शरीर से भिन्न शरीर की मालिक हम आत्मा हैं। डॉ. पुष्पा पाण्डेय ने कहा कि सच्चा युद्ध व्यक्ति को अपने विकारों से करना है तथा अपनी हिंसक प्रवृत्तियों का भी परिवर्तन करना है। ब्र.कु. डॉ. रीना ने सभी को परमात्मा शिव द्वारा सिखाए जा रहे राजयोग की अनुभूति कराई। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन ब्र.कु. दीपा ने किया। इसके साथ ही 'क्या वर्तमान समय गीता वृत्तान्त की पुनरावृत्ति का समय है?' विषय पर पैनल डिस्कशन का भी आयोजन किया गया। जिसमें सभी इस बात पर सहमत हुए कि ये विश्व के पुनरावर्तन का ही दौर चल रहा है।

हृदयरोग से बचने के लिए लाइफ स्टाइल में परिवर्तन ज़रूरी - डॉ. गुप्ता

रायपुर-छ.ग.। हृदयरोग से बचने के लिए जीवनशैली को बदलना ज़रूरी है। हृदयरोग का प्रमुख कारण है तनाव, चिन्ता, गुस्सा और उदासी। उक्त विचार 'त्रि-आयामी स्वास्थ्य समारोह' के दौरान ग्लोबल हॉस्पिटल माउण्ट आबू के हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. सतीश गुप्ता ने व्यक्त किये। उन्होंने आँकड़े देते हुए कहा कि यूरोप और अमेरिका वासियों की तुलना में तीन से चार गुणा अधिक भारतीय हृदयरोग से पीड़ित हैं। उन्होंने बाईपास सर्जरी को सिर्फ टाइम पास बताया। त्रि-आयामी

हृदयोपचार में प्रतिपादित 'सोल, माइंड, बॉडी और मेडिसिन' के सिद्धान्त को सरकार ने भी स्वीकार किया है। उन्होंने इसे नेशनल प्रोग्राम ऑफ लाइफ स्टाइल घोषित किया है। बहुत जल्द ही इसे स्कूलों में भी पढ़ाया जाएगा। हृदयरोग की जड़ मन में छुपी है। राजयोग मेडिटेशन मन को सुमन बनाने में हमारी मदद करता है।

देर रात तक जागना, सुबह देर से उठना और बेसमय भोजन खाना तथा तेल का ज़्यादा सेवन करने से आर्टरीज में ब्लॉकेज शुरू हो जाता है। उन्होंने



कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. कमला, आर. प्रसन्ना, डॉ. सतीश गुप्ता तथा डॉ. नागरकर।

शरीर के अंदर की घड़ी को फॉलो करने का सुझाव देते हुए कहा कि ब्लॉकेज के कारण हार्ट अटैक नहीं आता, बल्कि निगेटिव विचारों से आता है।

डॉ. गुप्ता ने कहा कि सुबह के समय सकारात्मक चिंतन करें, और मेडिटेशन करें, क्योंकि इसी समय शरीर में हार्मोन्स रिलीज होते हैं, जो कि हमें

बीमारी से बचाते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वास्थ्य सेवा आयुक्त आर. प्रसन्ना ने कहा कि वर्तमान भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में शारीरिक स्वास्थ्य

की ओर किसी का ध्यान नहीं है। इसी का दुष्परिणाम बीमारियों के रूप में सामने आता है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर के डायरेक्टर डॉ. नितिन एम. नागरकर ने कहा कि विदेशों में इस बात पर अनेकों रिसर्च हुए हैं जिससे यह सिद्ध हुआ है कि दवाई के बिना भी विभिन्न रोगों का उपचार किया जा सकता है। क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला दीदी ने सभी मेहमानों का स्वागत किया। मंच संचालन छ.ग. योग आयोग की सदस्य ब्र.कु. मंजू ने किया।